सत्यमेव जयते

रोज़गार समाचार

www.rojgarsamachar.gov.in
www.employmentnews.gov.in

साप्ताहिक

अंग्रेजी एवं उर्दू में भी प्रकाशित
(वार्षिक शुल्क : ₹ 350)

खण्ड 37 अंक 35 पृष्ठ 48 | नई दिल्ली 1-7 दिसंबर 2012 | ₹ 8.00

रोज़गार सारांश

ईसीएल

● ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड द्वारा विभिन्न 874 पदों के लिए आवेदनपत्र आमंत्रित.
अंतिम तारीख : 25.12.2012

कृ. वै. भ. बो.

● कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा कृषि अनुसंधान सेवा परीक्षा-2012 अधिसूचित.
रिक्तियां : 431
अंतिम तारीख : 18.12.2012

आयुध निर्माणी

● आयुध निर्माणी, वरणगांव को 371 ट्रेड्समैन (अर्द्ध-कुशल) की आवश्यकता. ऑनलाइन आवेदन-पत्र प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि : 21 दिन होगी.

वै.औ.अ.प.

● वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा सहायक ग्रेड-I के 100 (लगभग) पदों की भर्ती के लिए संयुक्त प्रशासनिक परीक्षा-2013 अधिसूचित
अंतिम तारीख : 31.12.2012

बीसीपीएल

● ब्रह्मपुत्र क्रैकर एंड पॉलीमर लिमिटेड को 93 फोरमैन, कनिष्ठ अधीक्षक, ऑपरेटर और तकनीशियन आदि की आवश्यकता.
अंतिम तारीख : 17.12.2012

ईएसआईसी

● ईएसआई पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसिस एवं रिचर्स तथा ईएसआईसी हॉस्पिटल एंड ऑक्यूपेशनल डिजीज सेंटर (पू. क्षे.) कोलकाता को 87 स्टॉफ नर्स, फार्मासिस्ट नर्सिंग अर्दली, ड्रेसर आदि की आवश्यकता
अंतिम तारीख : 7.12.2012
बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों, सशस्त्र सेनाओं, रेलवे और अन्य सरकारी विभागों की अन्य रिक्तियों के लिए अंदर के पृष्ठ देखें.

स्वरोज़गार : ग्रामीण पलायन पर एक विराम

—राम चरण धाकड़

भारत में, परंपरागत दस्तकारी के औद्योगीकरण और यंत्रीकरण ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के अवसरों पर इतना विपरीत असर डाला है कि ये लगभग बंद होने के कगार पर हैं. दूसरी तरफ कृषि में निवेश की बढ़ती लागत, अपर्याप्त और अनिश्चित वर्षा तथा कृषि उत्पादों की बिक्री की अनिश्चयता ने कृषि को एक अलाभकारी व्यवसाय बना डाला है. इन सब कारणों ने गांवों में बेरोज़गारी की स्थिति को और गंभीर बनाने में योगदान किया है. राजस्थान के भरतपुर ज़िले में परिश्रमी ग्रामीणों ने स्वरोज़गार उद्यमों के लिए सामाजिक सेवा अंशदानों, लघु और अल्पावधि ऋणों की उपलब्धता के साथ अपने भविष्य को संवारा है. सतत प्रयासों के फलस्वरूप बड़ी संख्या में बेरोज़गार युवाओं ने अपने खुद के ही गांवों में स्वरोज़गार शुरू करके अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार किया है. आधुनिक प्रौद्योगिकी और मशीनें स्थापित की हैं और मिट्टी के बर्तनों, फर्नीचर निर्माण, कृषि उपकरणों के फैब्रीकेशन, कांच की चूड़ियों के निर्माण तथा दोने और पत्तल उत्पाद जैसी परंपरागत दस्तकारी में इनका इस्तेमाल किया जा रहा है.

दि लुपिन ह्यूमैन वेलफेयर एंड रिसर्च फाउण्डेशन, अपने कार्पोरेट सामाजिक दायित्व के तौर पर मुख्यतः राजस्थान के भरतपुर ज़िले में बेरोज़गारी की समस्या के समाधान के लिए कार्य कर रहा है. क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए बेरोज़गार युवाओं और महिलाओं, दोनों के लिए बड़ी संख्या में स्वरोज़गार कार्यक्रम शुरू किये गये हैं. लाभार्थियों को सघन प्रशिक्षण प्रदान किया गया है तथा उन्हें विभिन्न संस्थानों से आसान शर्तों पर ऋण उपलब्ध करवाया गया है. लोगों को लाभ पहुंचाने के वास्ते केंद्र और राज्य सरकारों, दोनों की योजनाओं का इस्तेमाल किया गया है.

इन प्रयासों में, बाज़ार में परंपरागत दस्तकारों के उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण उपस्थिति के ज़रिये, एक असीम सफलता प्राप्त हुई है। स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की स्थापना से महिलाओं में भी स्वरोज़गार से जुड़ी गतिविधियों को बढ़ावा मिला है. इन प्रयासों से महिलाओं को न केवल अपने परिवारों के लिए आमदनी जुटाने के कार्य में संलग्न होने का मौका दिया है बल्कि उन्हें अपने परिवारों की शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल और उनके स्थायित्व के प्रति ध्यान देने के लिए सक्षम बनाया है.

एक गांव की कहानी:-

राजस्थान के भरतपुर ज़िले में एक छोटे से गांव 'नया बारखेड़ा' के निवासियों ने, जिनके बारे में कहा जाता है कि ये स्वतंत्रता से पूर्व एक तत्कालीन शासक द्वारा पश्चिमी राजस्थान से भरतपुर में ऊंटों के साथ लाकर बसाए गए लोगों के वंशज हैं, लुपिन फाउण्डेशन की मदद से अपने भविष्य को उज्ज्वल किया है. स्वरोज़गार उद्यम तथा आवास के लिए लघु एवं अल्पावधि ऋणों से इन मेहनती ग्रामीणों को बहुत मदद मिली है.

रायबाड़ी कलां से संबंधित ग्रामवासी, जो सभी ऊंटों की उन्नत नस्लों के स्वामी होते थे, भरतपुर के

तत्कालीन शासक, महाराजा किशन सिंह द्वारा सुदूरवर्ती जैसलमेर ज़िले से लाए गए थे. इन रायबाड़ियों को अपने ऊंटों पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक सैन्य सामग्री की आपूर्ति करने का दायित्व सौंपा गया था तथा इन्हें वीर तहसील में जीवड़ गांव के निकट बाणगंगा नदी के जलग्रहण क्षेत्र में ज़मीन आबंटित की गई. आज़ादी के बाद ये ग्रामीण बेरोज़गार हो गए. वे रोज़गार की तलाश में हरियाणा और पंजाब जाने लगे. दि लुपिन फाउण्डेशन ने इस पिछड़े गांव नया बारखेड़ा को संपूर्ण विकास के लिए पांच साल पहले गोद लिया था और आवासों के निर्माण तथा स्वरोज़गार उद्यमों के लिए राज्य सरकार की योजनाओं के ज़रिये सहायता प्रदान की. विभिन्न वित्तीय संस्थानों से आसान शर्तों तथा कम ब्याज़ दरों पर ऋणों की व्यवस्था की गई. गांव में 160 परिवारों में से क़रीब 30 के पास अपने ऊंट थे, लेकिन इनमें से किसी के पास भी अपना स्वयं का कोई लाभकारी कामधंधा शुरू करने के लिए पर्याप्त धनराशि नहीं थी। वे अपने ऊंटों का इस्तेमाल उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों पर मालढुलाई के लिए किया करते थे और इससे वे अपनी छोटी-मोटी आजीविका चलाते थे. अन्य लोग मियादी श्रमिकों के तौर पर काम करते थे परंतु ये राशि उनके जीवन-यापन के लिए पर्याप्त नहीं थी. यहां पक्के मकानों के निर्माण के लिए विभिन्न वित्तीय संस्थानों से 30 परिवारों को, प्रत्येक को रु. 50,000/- की राशि ऋण के रूप में उपलब्ध करवाई गई. इन परिवारों को अपनी स्वयं की बचतों का इस्तेमाल करने के प्रति भी प्रोत्साहित किया गया. पिछले पांच वर्षों के सतत प्रयासों के फलस्वरूप, नया बारखेड़ा में घास-फूंस की सभी झोपड़ियों को अब मज़बूत पक्के घरों में तबदील कर दिया गया है. आवासीय समस्या को हल करने के उपरांत, लुपिन फाउण्डेशन ने ग्रामीणों के लिए स्वरोजगार हेतु ऋणों की व्यवस्था की. ग्रामीणों को अपने मवेशियों से प्राप्त दूध को बेचने के लिए अब बहुत दूर तक नहीं जाना पडता है, बल्कि उनके घरों में ही नियमित ग्राहक पहुंच जाते हैं. क्रेता अब नया बारखेड़ा गांव से हरोज़ 400 से 500 लीटर दूध की खरीद करते हैं और केवल ऊंटों को ही दूध बेचने के लिए दौसा में दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ ले जाना पड़ता है.

ग्रामीणों की मेहनत का एक सकारात्मक पहलू ये रहा कि इससे युवाओं के शैक्षणिक स्तर में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है. गांवों के सभी बच्चों का अब स्कूल में दाखिला हो चुका है और करीब दो दर्ज़न छात्र उच्चतर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं. ग्रामीण स्वास्थ्य ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील हो गए हैं, जिसका अंदाज़ा हर साल दो बार आयोजित किये जाने वाले चिकित्सा शिविरों में लोगों, खासकर महिलाओं की उमड़ती भारी भीड़ से लगाया जा सकता है.

गांवों के निवासियों की मेहनत के फलस्वरूप गांव की समृद्धि और विकास से क्षेत्र के लोगों ने नया बारखेड़ा गांव को पूर्ववर्ती ऊंट वालों का गांव (ऊंट पालकों का गांव) के स्थान पर अब मेहनतकश लोगों का गांव (व्यवसायी लोगों का गांव) कहना शुरू कर दिया है. ग्रामीणों की सबसे बड़ी उपलब्धि स्वयं के प्रयासों से बेरोज़गारी उन्मूलन रहा है.

इसी प्रकार, ग्रामीण आजीविका सृजन कार्यक्रमों के तहत उठाए गए कदमों से ज़िले की वीर पंचायत समिति में नगला सिरसियां गांव के बड़ी संख्या में युवाओं को प्रशिक्षण देकर और उन्हें गांवों में ही स्थापित लघु इकाइयों में रत्न पत्थरों की पॉलिश का लाभकारी व्यवसाय उपलब्ध कराते हुए रोज़गारी बनाया गया है. इस काम के लिए बड़ी संख्या में युवाओं ने अपनी खुद की मशीनें लगाने के वास्ते ऋण प्राप्त कर लिया है. नगला सिरसियां में ग्रामीण युवा हररोज़ रत्नों और अन्य कीमती पत्थरों की पॉलिश के लिए एकत्र होते हैं, जिन्हें वे रत्न उद्योग के हब जयपुर से लेकर आते हैं. गांवों में चहुं ओर पावर जनरेटरों की आवाजों की गूंज सुनाई देती है, जिनसे वहां घर-घर में मशीनें चलाई जाती हैं क्योंकि दिन में गांव में बहुत कम अवधि के लिए विद्युत की आपूर्ति प्राप्त होती है. नगला सिरसियां गांव को दो वर्ष पहले इसके संपूर्ण विकास और स्वरोज़गार के अवसर तलाशने के लिए गोद लिया गया था.

(शेष पृष्ठ 48 पर)

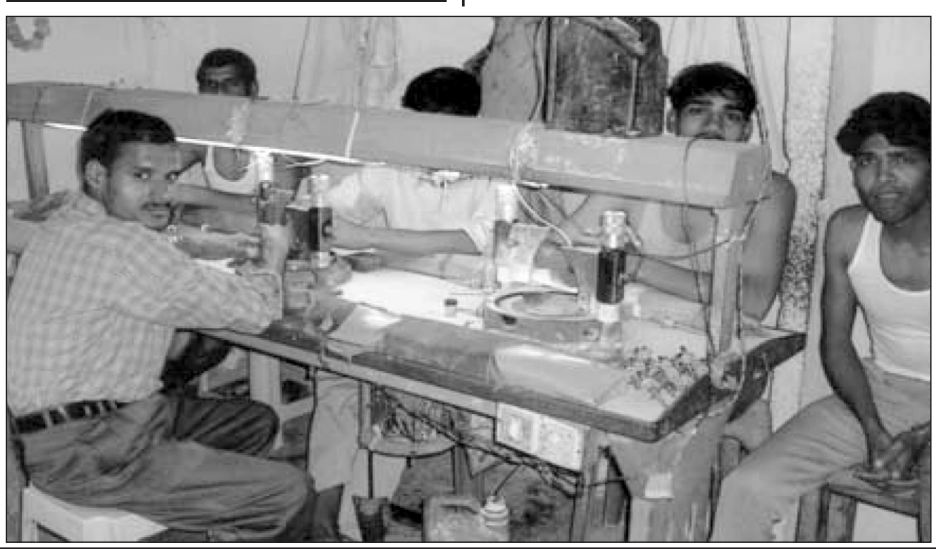

ग्रामीण पलायन पर एक विराम...

(पृष्ठ 1 का शेष)

गांव के कुछ नौज़वानों ने स्वयं का काम धंधा शुरू करने के वास्ते ऋण प्राप्त करने के लिए फाउण्डेशन की मदद मांगी और अतिरिक्त युवाओं को रोज़गार उपलब्ध कराने के प्रति वचनबद्धता दर्शाई.

एक युवक ने भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक से आसान शर्तों पर रु. 35,000/- का ऋण प्राप्त किया. उसने एक मशीन खरीदी और जयपुर से कच्चा माल लेकर काम धंधा शुरू किया. उससे प्रेरणा लेकर गांव के अन्य युवाओं ने भी अपनी खुद की मशीनें खरीदने का फैसला किया. फाउण्डेशन ने एक बार फिर ऋण प्राप्त करने में उनकी मदद की. युवा उद्यमियों ने जयपुर के वेंडर्स से कीमती पत्थर लाकर और पॉलिशिंग के उपरांत उन्हें लौटाना शुरू कर दिया। इस समय नगला सिरसियां गांव के करीब 60 घरों में रत्न पत्थर की कम से कम 25 पॉलिशिंग मशीनें स्थापित की जा चुकी हैं.

वे करीब 225 युवाओं को लाभकारी रोज़गार उपलब्ध करवा रही हैं. इसी पंचायत समिति वीर में ही अन्य गांवों, जैसे कि नगला इतमडा, भुसावर, बल्लभगढ़, नयावास, नवार, हिसमाडा, बजेड़ा कलां और बारोली में भी करीब 35 इकाइयां स्थापित की गई हैं.

फाउण्डेशन ने हाल ही में कुछ युवाओं को प्रशिक्षण के लिए जेम्स कटिंग एंड पॉलिशिंग इंस्टीट्यूट, जयपुर भेजा था. ये युवा नये कौशल के साथ लौटे हैं और फाउण्डेशन इनके लिए आधुनिक, उच्च गति की जेम्स कटिंग और पॉलिशिंग मशीनों की खरीद हेतु ऋण उपलब्ध करवाने के लिए वित्तीय संस्थानों से बातचीत कर रहा है. इन अत्याधुनिक मशीनों की संस्थापना के साथ ही ये व्यवसाय बेहतर आमदनी का एक ज़रिया बनेगा और अधिक संख्या में युवा इस उद्यम को अपनाएंगे.

इन प्रयासों से गांवों में लोगों का जीवन स्तर बढ़ा है. इन परिवारों में सभी बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और ये परिवार अपने समर्पित कार्य के जरिए राष्ट्र निर्माण में भी सक्रिय योगदान कर रहे हैं.

(लेखक: राजस्थान सरकार, भरतपुर में कार्यरत हैं

ई मेल: rcdhakar@gmail.com)